पीछे मुड़ना नहीं

अमेज़िंग फ़ैक्ट्स
अध्ययन संदर्शिका
27

जब एक स्काइडाइवर (विमान से कलाबाजी करने वाला) विमान के दरवाजे के किनारे पहूँचकर छलांग लगाती है और विमान से दूर हो जाती है, तो उसे पता होता है कि वह विमान में वापस नहीं जा सकती है। वह बहुत दूर चली गई है, और अगर वह पैराशूट से अपने आप को बांधना भूल जाती है, तो उसे कोई भी बचा नहीं सकता और वह निश्चित रूप से एक डरावनी मौत के लिए गिर जाएगी। कितनी शोकपूर्ण घटना है! लेकिन एक व्यक्ति के साथ इससे भी बुरा हो सकता है। दरअसल, परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में कोई वापसी नहीं होने के उस स्तिथि के संदर्भ में यह बहुत बुरा है। फिर भी लाखों लोग इस स्तिथि पर आ रहे हैं और उन्हें कोई जानकारी नहीं है! क्या यह संभव है कि आप उनमें से एक हैं? वह भयानक पाप क्या है जो इस तरह की त्रासदी का कारण बन सकता है? परमेश्वर इसे क्षमा क्यों नहीं कर सकते? एक स्पष्ट उत्तर के लिए - जो आशा से भरा हुआ है - इस आकर्षक अध्ययन संदर्शिका के लिए बस कुछ ही मिनटों का समय निकालें।

1 ऐसा कौन सा पाप है जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं कर सकता?

"मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी" (मत्ती 12:31)।

उत्तर: ऐसा पाप, जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं कर सकता वह है "पवित्र आत्मा की निन्दा।" लेकिन "पवित्र आत्मा की निन्दा" क्या है? लोगों के पास इस पाप के बारे में कई अलग-अलग मान्यताएँ हैं। कुछ का मानना है कि यह हत्या है; कुछ का मानना है, पवित्र आत्मा को शाप देना; कुछ का मानना है, आत्महत्या करना; कुछ का मानना, एक अज्ञात बच्चे की हत्या करना; कुछ का मानना है, मसीह का इनकार करना; कुछ का मानना है, एक जघन्य, दुष्ट अपराध; और दुसरों का मानना, एक झूठे परमेश्वर की स्तुति करना। अगला सवाल इस महत्वपूर्ण मामले पर कुछ उपयोगी प्रकाश डालेगा।

2 पाप और निन्दा के बारे में बाइबल क्या कहती है?

"मैं तुम से कहता हूँ कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी" (मत्ती 12:31)।

उत्तर: बाइबल कहती है कि सभी प्रकार के पाप और निन्दा को क्षमा किया जाएगा। इसलिए प्रश्न 1 में सूचीबद्ध पापों में से कोई भी पाप वह पाप नहीं है जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं कर सकता। किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य अक्षम्य पाप नहीं है। यह विरोधाभासी हो सकता है, लेकिन निम्नलिखित दोनों कथन सत्य हैं:

क. किसी भी प्रकार के पाप और निन्दा को क्षमा किया जाएगा।

ख. पवित्र आत्मा के खिलाफ निन्दा या पाप क्षमा नहीं किया जाएगा

यीशु ने दोनों बयान दिए:
यीशु ने, मत्ती 12:31 में, दोनों बयान दिए, इसलिए यहाँ कोई त्रुटि नहीं है। बयानों को सुसंगत बनाने के लिए, हमें पवित्र आत्मा के काम की खोज करनी चाहिए।

3 पवित्र आत्मा का काम क्या है?

"वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। ... तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा" (यूहन्ना 16:8,13)।

उत्तर: पवित्र आत्मा का कार्य हमें पाप का आपराधबोध कराना और हमें सच्चाई में मार्गदर्शन कराना है। पवित्र आत्मा बदलाव के लिए परमेश्वर की संस्था है। पवित्र आत्मा के बिना, कोई भी पाप के लिए दुख महसूस नहीं करता है, न ही कोई कभी भी परिवर्तित हुआ है।

4 जब पवित्र आत्मा हमें पाप के बारे में बताता है, तो हमें क्षमा प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

"हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)।

उत्तर: पवित्र आत्मा के द्वारा पाप के दोषी होने पर, हमें क्षमा प्राप्त करने के लिए अपने पापों को कबूल करना चाहिए। जब हम उन्हें स्वीकार करते हैं, परमेश्वर न केवल क्षमा करता है बल्कि वह हमें सभी अधर्म से शुद्ध करता है। परमेश्वर इंतज़ार कर रहा है और आप ने जो भी पाप किये हैं वह उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार है (भजन संहिता 86:5), परन्तु सिर्फ तब जब आप पाप स्वीकार करते हैं और इसे त्याग देते हैं।

5 अगर पवित्र आत्मा द्वारा दोषी ठहराए जाने पर भी हम अपने पापों को कबूल नहीं करते हैं, तो क्या होता है?

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी" (नीतिवचन 28:13)।

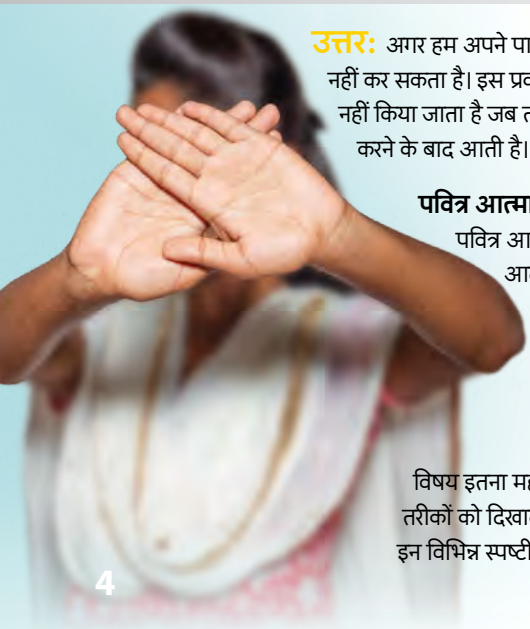

उत्तर: अगर हम अपने पापों को स्वीकार नहीं करते हैं, तो यीशु हमारे पापों को क्षमा नहीं कर सकता है। इस प्रकार, हम जो भी पाप स्वीकार नहीं करते हैं, वह तब तक क्षमा नहीं किया जाता है जब तक कि हम उसे स्वीकार न करें, क्योंकि माफी हमेशा स्वीकार करने के बाद आती है। यह इससे पहले कभी नहीं आती है।

पवित्र आत्मा की निंदा करने का भयानक खतरा:

पवित्र आत्मा का विरोध करना बहुत खतरनाक है, क्योंकि यह पवित्र आत्मा की पूर्ण अस्वीकृति को और आसानी से लाता है, जो पाप है और जिसे परमेश्वर कभी माफ नहीं कर सकता। यह उस बिन्दु से आगे बढ़ जाता है जहाँ से लौटा जा सकता है। चूँकि पवित्र आत्मा एकमात्र ऐसी संस्था है, जो हमें अपना दोष महसूस कराती है, अगर हम उसे स्थायी रूप से अस्वीकार करते हैं, तो हमारा मामला निराशाजनक है। यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि इसे परमेश्वर पवित्रशास्त्र में कई अलग-अलग तरीकों को दिखाता है और समझाता है। इन अध्ययनों की खोज जारी रखते हुए इन विभिन्न स्पष्टीकरणों को देखें।

6 जब पवित्र आत्मा हमें पाप का दोषी ठहराता है या हमें नई सच्चाई की ओर ले जाता है, तो हमें कब प्रतिक्रिया करना चाहिए?

उत्तर: बाइबल कहती है:

क. "मैं ने तेरी आज्ञाओं को मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है" (भजन संहिता 119:60)।

ख. "उद्धार के दिन मैं ने तेरी सहायता की" (2 कुरिंथियों 6:2)।

ग. "देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरिंथियों 6:2)।

घ. "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों 22:16)।

बाइबल बार-बार कहती है कि जब हमें पाप का दोषी ठहराया जाता है, तो हमें इसे एक बार में स्वीकार करना होगा। और जब हम नई सच्चाई सीखते हैं, तो हमें बिना किसी देरी के उसे स्वीकार करना होगा।

7 परमेश्वर ने अपनी पवित्र आत्मा के निवेदन के बारे में क्या गंभीर चेतावनी दी है?

"मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा" (उत्पत्ति 6:3)।

उत्तर: परमेश्वर गंभीरता से चेतावनी देता है कि पवित्र आत्मा अनिश्चित काल तक किसी व्यक्ति के साथ पाप से मुड़ने और परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रार्थना नहीं करता है।

8 पवित्र आत्मा कब किसी व्यक्ति से विनती करना बंद कर देता है?

"मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूँ कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते, और नहीं समझते" (मत्ती 13:13)।

उत्तर: पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति से बात करना तब बंद कर देता है जब वह व्यक्ति उसकी आवाज के लिए बहरा बन जाता है। बाइबल इसे सुन कर भी अनसुना करने के रूप में वर्णन करती है। बेहरे व्यक्ति के कमरे में अलार्म घड़ी को स्थापित करने में कोई लाभ नहीं है। वह इसे नहीं सुनेगा। इसी प्रकार, एक व्यक्ति खुद को इस स्तिथि में बंद कर देता है कि उठने के लिए अलार्म की आवाज़ नहीं सुन सकता है। आखिरकार वह दिन आता है जब अलार्म बंद हो जाता है और वह इसे नहीं सुनता है।

पवित्र आत्मा की आवाज़ को बंद न करें

तो यही पवित्र आत्मा के साथ भी होता है। अगर हम उसकी पुकार सुनना बंद कर देते हैं, तो एक दिन वह हमसे बात करेगा और हम उसे नहीं सुन पाएँगे। जब वह दिन आता है, तो आत्मा दुखी होकर हमसे दूर हो जाता है क्योंकि हम उसकी याचिकाओं के लिए बहरे हो जाते है। हमने वापसी की सीमा पार कर ली है।

9 परमेश्वर, पवित्र आत्मा के माध्यम से, ज्योति (यूहन्ना 1:9) और दृढ़ता (यूहन्ना 16:8) प्रत्येक व्यक्ति को देता है। जब हमें पवित्र आत्मा से यह ज्योति प्राप्त होती है तो हमें क्या करना चाहिए?

"धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है" (नीतिवचन 4:18,19)। "जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे;" (यूहन्ना 12:35)।

उत्तर: बाइबल का नियम यह है कि, जब पवित्र आत्मा हमें पाप की नई रोशनी या ज्ञान देता है, तो हमें बिना किसी देरी के कार्य करना चाहिए। यदि हम ज्योति प्राप्त करते हैं और ज्योति में चलते हैं, तो हमें वह ज्योति देता रहेगा। यदि हम इनकार करते हैं, तो हमारे पास जो ज्योति है, वह चली जाएगी, और हम अंधेरे में रह जाएँगे। अंधकार जो ज्योति की आज्ञा उल्लंघनता करने से लगातार और अंतिम इनकार से आता है, वह, पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने का परिणाम है, और यह बात हमें आशा से वंचित कर देती है।

10 क्या कोई भी पाप पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप बन सकता है?

उत्तर: हाँ। यदि हम दृढ़ता से किसी भी पाप को अस्वीकार करने और त्यागने से इनकार करते हैं, तो हम अंततः पवित्र आत्मा की विनती सुनने के लिए बहरे बन जाएँगे और इस प्रकार कोई वापसी का अवसर नहीं रह जाएगा। बाइबल में दिए गए कुछ निम्नलिखित उदाहरण हैं:

क. यहूदा का, क्षमा न किये जाने वाला पाप, लोभ था (**यूहन्ना 12:6**)। क्यों? क्या ऐसा इसलिए था कि परमेश्वर इसे माफ नहीं कर सका? नहीं! यह केवल इसलिए अक्षम्य हो गया क्योंकि यहूदा ने पवित्र आत्मा को सुनने से इनकार कर दिया और अस्वीकार किया और लोभ के पाप को नहीं त्याग दिया। आखिर में वह आत्मा की आवाज के लिए बहरा बन गया।

ख. लूसिफर के क्षमा न होने वाले पाप, गर्व और आत्म-उत्थान थे (**यशायाह 14:12-14**)। जबकि परमेश्वर इन पापों को माफ कर सकता है, लूसिफर ने तब तक सुनने से इनकार किया, जब तक कि वह आत्मा की आवाज सुनने में असमर्थ हो न गया।

घ. फरीसियों के क्षमा न होने वाले पाप, यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने से इंकार करना था (**मरकुस 3:22-30**)। वे दिल से दृढ़ विश्वास के साथ बार-बार आश्वस्त थे कि यीश मसीह - जीवित परमेश्वर का पुत्र था। लेकिन उन्होंने अपने हृदय को कठोर कर दिया और ज़िद्द से उसे उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया। अंत में वे आत्मा की आवाज के लिए बहरे हो गए। फिर एक दिन, यीशु के एक अद्भुत चमत्कार के बाद, फरीसियों ने भीड़ को बताया कि यीशु ने शैतान से अपनी शक्ति प्राप्त की है। मसीह ने एक बार उनसे कहा था कि शैतान को उनकी चमत्कार का जिम्मेदार ठहराने से संकेत मिलता है कि, उन्होंने पवित्र आत्मा की निंदा के कारण अपनी वापसी को सीमा पार कर ली थी। परमेश्वर, हो सकता है उन्हें खुशी से माफ कर भी देता, लेकिन उन्होंने तब तक इनकार किया जब तक कि वे पवित्र आत्मा के लिए पूर्ण रूप से बहरे नहीं हो गए और पवित्र आत्मा उन तक न पहुँच सका।

मैं परिणाम नहीं चुन सकता

जब पवित्र आत्मा निवेदन करता है, तब हम जवाब देने या अस्वीकार करने का विकल्प चुन सकते हैं, लेकिन हम परिणामों का चयन नहीं कर सकते हैं। वे तय हैं। अगर हम लगातार जवाब देते हैं, तो हम यीशु की तरह बन जाएँगे। पवित्र आत्मा परमेश्वर की संतान (**प्रकाशितवाक्य 7:2,3**) के रूप में हमारे माथे पर मुहर लगा देगा, और इस प्रकार हमें परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य में एक जगह आश्वस्त करेगा। हालांकि, यदि हम लगातार जवाब देने से इनकार करते हैं, तो हम पवित्र आत्मा को दुखी करेंगे – और वह हमें हमेशा के लिए छोड़ देगा, हमारे विनाश को मुहर लगा देगा।

11 राजा दाऊद ने व्यभिचार और हत्या के भयंकर दोहरे पाप करने के बाद, उसने बेचैनी में क्या प्रार्थना की?

"अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर" (भजन संहिता 51:11)।

उत्तर: उसने परमेश्वर से आग्रह किया कि वह पवित्र आत्मा को न ले जाए। क्यों? क्योंकि दाऊद जानता था कि पवित्र आत्मा ने यदि उसे छोड़ दिया, तो वह उसी क्षण बर्बाद हो जायेगा। वह जानता था कि केवल पवित्र आत्मा उसे पश्चाताप और पुनरूद्धार के ओर ले जा सकता है, और वह पवित्र आत्मा की पुकार के लिए बहरा बनने के विचार से ही थरथरा गया। बाइबल हमें एक और जगह में बताती है कि परमेश्वर ने अंततः एप्रैम को अकेला छोड़ दिया क्योंकि वह अपनी मूर्तियों (होशे 4:17) में शामिल हो गया था और आत्मा की पुकार सुन नहीं पाया। वह आत्मिक रूप से बहरा बन गया था। किसी व्यक्ति के साथ होने वाली सबसे दुखद बात परमेश्वर को उसे अपने से दूर करना और उसे अकेला छोड़ देना है। ऐसा न होने दें!

12 प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके में कलीसिया को क्या गंभीर आदेश दिया था?

"आत्मा को न बुझाओ" (1 थिस्सलुनिकियों 5:19)।

उत्तर: पवित्र आत्मा का विनम्र आग्रह अग्नि की तरह है जो किसी व्यक्ति के दिमाग और दिल में जलता है। पवित्र आत्मा पर पाप का प्रभाव ऐसा होता है जैसे पानी का आग पर होता है। जैसे ही हम पवित्र आत्मा को अनदेखा करते हैं और पाप में रहते हैं, हम पवित्र आत्मा की आग पर पानी डालते हैं। थिस्सलुनिकियों के लिए पौलुस के भारी शब्द आज भी हमारे लिए लागू होते हैं। पवित्र आत्मा की आवाज़ पर ध्यान देने से इनकार करते हुए पवित्र आत्मा की आग मत बुझाओ। यदि आग बुझ जाती है, तो हम वापस लौटने की स्तिथि को पार कर चुके हैं!

कोई भी पाप आग बुझा सकता है

कोई भी पाप जिसे स्वीकार नहीं किया गया है और त्यागा नहीं गया है, आखिरकार पवित्र आत्मा की आग को बुझा सकता है। यह परमेश्वर के सातवें दिन सब्त को मानने से इंकार करना भी हो सकता है। यह, शराब का उपयोग किया जाना हो सकता है। या, जिसने आपको धोखा दिया है या घायल किया है, उसे माफ करने में असफल रहना हो सकता है। यह अनैतिकता हो सकती है। यह परमेश्वर के दशमांश न देना हो सकता है। किसी भी क्षेत्र में पवित्र आत्मा की आवाज़ का पालन करने से इंकार करने से पवित्र आत्मा की आग पर पानी डाला जाता है। आग न बुझाएँ। कोई बड़ी त्रासदी नहीं होगी।

13 पौलुस ने थिस्सलुनीके के विश्वासियों को और क्या चौंकाने वाला बयान दिया?

"नाश होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता। इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें, ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, वे सब दण्ड पाएँ" (2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12)।

उत्तर: क्या ही शक्तिशाली, चौंकाने वाले शब्द! परमेश्वर कहता है कि जो लोग पवित्र आत्मा द्वारा लाए गए सत्य और दृढ़ विश्वास को प्राप्त करने से इनकार करते हैं, आत्मा के उनके पास से निकल जाने के बाद - एक मजबूत भ्रम प्राप्त होता है कि त्रुटि ही सत्य है। एक गंभीर विचार।

14 जिन लोगों को यह दृढ़ भ्रम प्राप्त होगा वे न्याय में क्या अनुभव करेंगे?

"उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?' तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, 'मैं ने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ!" (मत्ती 7:22, 23)।

उत्तर: जो लोग "प्रभु, प्रभु" कहते रहते हैं, वे चौंक जाएँगे कि वे बहार हो गए हैं। वे सकारात्मक होंगे कि वे बचाए गए थे। तब यीशु निश्चित रूप से उन्हें उनके जीवन के उस महत्वपूर्ण वक्त को याद दिलाएगा जब पवित्र आत्मा उनके लिए नई सच्चाई और दृढ़ विश्वास लाया था। यह स्पष्ट था कि यह सच है। यह उन्हें रात में जागृत रखता था क्योंकि वे एक न्याय पर कशमकश करते थे। उनके दिल कैसे उनके भीतर जलते थे! अंत में, उन्होंने कहा, "नहीं!" उन्होंने पवित्र आत्मा को और सुनने से इनकार कर दिया। फिर एक बड़ा भ्रम आया जिसने उन्हें उनके खोने के दौरान उद्धार पाया हुआ महसूस कराया। यह कितनी बड़ी त्रासदी है?

15 जब हम वास्तव में खो जाते हैं, तो हमें इस विश्वास से बचाने के लिए की हम बच गए हैं, यीशु ने चेतावनी के कौन से विशेष शब्द दिए हैं?

"जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)।

उत्तर: यीशु ने गंभीरता से चेतावनी दी कि वे सब जिनके पास आश्वासन की भावना नहीं है, कि वे उसके राज्य में प्रवेश करेंगे, बल्कि, केवल वही लोग जो उसकी इच्छा पूरी करेंगे। हम सभी उद्धार का आश्वासन चाहते हैं - और परमेश्वर हमें बचाना चाहता है! हालांकि, आज मसीही जगत के लोगों को व्यापक रूप से उद्धार का झूठा आश्वासन हो रहा है, जबकि वे पाप में रहना जारी रखते हैं और अपने जीवन में कोई बदलाव नहीं करते हैं।

यीशु सारी शंकाएं दूर कर देता है:

यीशु ने कहा कि सच्चा आश्वासन उन लोगों के लिए है जो उसके पिता की इच्छा पूरी करते हैं। जब हम यीशु को हमारे जीवन के परमेश्वर और शासक के रूप में स्वीकार करते हैं, तो हमारी जीवन शैली बदल जाती है। हम पूरी तरह से एक नए प्राणी बन जाते हैं (2 कुरिंथियों 5:17)। इस कारण हम खुशी से उसकी आज्ञाओं को मानेंगे (यूहन्ना 14:15), उसकी इच्छा पूरी करेंगे, और खुशी से उसका अनुसरण करेंगे, जहाँ वह ले जायेगा (1 पतरस 2:21)। प्रभु की शानदार पुनरुत्थान शक्ति (फिलिप्पियों 3:10) हमें उसके स्वरूप में बदल देगी (2 कुरिन्थियों 3:18)। उसकी महिमामय हमारे जीवन में शानदार बहुतायत से शांति लाती है (यूहन्ना 14:27)। यीशु ने अपनी आत्मा के माध्यम से हमारे साथ निवास किया (इफिसियों 3:16, 17), अब हम "सब कुछ कर सकते हैं" (फिलिप्पियों 4:13) और "कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव न होगी" (मत्ती 17:20)।

शानदार वास्तविक आश्वासन बनाम नकली आश्वासन

जैसा कि हम उद्धारकर्ता की अगुवाई में रहते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, वह वादा करता है कि कोई भी हमें उसके हाथ से अलग नहीं ले जा सकता (यूहन्ना 10:28) और यह कि जीवन का मुकुट हमारा इंतजार कर रहा है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। क्या ही अद्भुत, गौरवशाली, वास्तविक सुरक्षा यीशु अपने अनुयायियों को देता है! किसी अन्य परिस्थिति में आश्वासन दिया गया आश्वासन नकली है। यह लोगों को स्वर्ग के न्याय में ले जाएगा, जब वे यह महसूस कर रहे हैं कि वे बच गए हैं जबकि वे वास्तव में खो गए हैं (नीतिवचन 16:25)।

16 अपने वफादार अनुयायियों को परमेश्वर की कौन सी आशीष है, जो उसे उसके जीवन में परमेश्वर का ताज पहनाते हैं?

"जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। ... क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है" (फिलिप्पियों 1:6; 2:13)।

उत्तर: परमेश्वर की स्तुति करो! जो लोग यीशु को अपने जीवन का प्रभु और शासक बनाते हैं, उन्हें यीशु के चमत्कारों का वादा किया गया है जो उन्हें उसके अनन्त साम्राज्य में सुरक्षित रूप से देख पाएँगे। इससे अधिक बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता!

17 यीशु ने हमें क्या शानदार अतिरिक्त वचन दिया है?

"देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ" (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

उत्तर: जब हम उसके लिए दरवाजा खोलते हैं तो यीशु हमारे जीवन में प्रवेश करने का वादा करता है। यह यीशु है जो पवित्र आत्मा के माध्यम से आपके दिल के द्वार पर दस्तक देता है। राजाओं के राजा और दुनिया के उद्धारकर्ता-नियमित रूप से, प्रेमपूर्ण यात्राओं और मित्रता, देखभाल, मार्गदर्शन और परामर्श के लिए आपके पास आता हैं। यीशु के साथ एक स्नेही, प्रेमपूर्ण, स्थायी दोस्ती बनाने के लिए हमें कभी भी बहुत लापरवाह या अत्यधिक व्यस्त नहीं होना चाहिए। यीशु के करीबी दोस्तों को न्याय के दिन पर ठोकर खाने का कोई खतरा नहीं होगा। यीशु व्यक्तिगत रूप से अपने राज्य में उनका स्वागत करेगा (मत्ती 25:34)।

18 क्या आप यीशु के लिए हमेशा दरवाजा खोलने का फैसला करेंगे क्योंकि वह आपके दिल पर दस्तक देता है और वह आपको स्वर्ग ले जाने के लिए तैयार करने के इच्छुक हैं?

आपका उत्तर: _____

एक अंतिम वचन

यह 27 अध्ययन संदर्शिकाओं की श्रृंखला में हमारी अंतिम अध्ययन संदर्शिका है। हमारी प्रेमपूर्ण इच्छा यह है कि आपको यीशु की उपस्थिति में ले जाया गया है, और आपने उसके साथ एक शानदार नए रिश्ते का अनुभव किया है। हमें आशा है कि आप हर दिन प्रभु के करीब चलते जाएँगे और जल्द ही उसके आगमन पर उस आनंदमय समूह में शामिल हो जाएँगे, जो उसके आगमन पर उसका राज्य बनेगा। अगर हम इस धरती पर नहीं मिलते हैं, तो हम उस महान दिन बादलों में मिलने के लिए सहमत हैं। अगर हम स्वर्ग की ओर आपकी यात्रा में सहायता कर सकते हैं तो कृपया कॉल करें या लिखें।

आपके प्रश्नों के उत्तर

1. बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने फिरौन के दिल को कठोर किया (निर्गमन 9:12)। यह उचित प्रतीत नहीं होता है। इसका क्या मतलब है?

उत्तर: पवित्र आत्मा सभी लोगों के साथ अनुरोध करता है, जैसे सूरज हर किसी और सबकुछ पर चमकता है (यूहन्ना 1:9)। वही सूरज जो मिट्टी को सख्त करता है, मोम को पिघला देता है। पवित्र आत्मा का हमारे हृदय पर अलग-अलग प्रकार का प्रभाव पड़ता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसकी याचिका से कैसे संबंधित हैं। अगर हम जवाब देते हैं, तो हमारे दिल नरम हो जाएँगे और हम पूरी तरह से बदल जाएँगे (1 शमूएल 10:6)। अगर हम विरोध करते हैं, तो हमारे दिल कठोर हो जाएँगे (जकर्याह 7:12)।

फिरौन की प्रतिक्रियाएँ

फिरौन ने पवित्र आत्मा का विरोध करके अपने दिल को कठोर कर लिया (निर्गमन 8:15, 32; 9:34)। लेकिन बाइबल भी परमेश्वर के बारे में बताती है कि वह अपने दिल को सख्त कर रहा है क्योंकि परमेश्वर का पवित्र आत्मा फिरौन से विनती करता रहा है। चूंकि फ़िरौन विरोध कर रहा था, इसलिए सूरज जैसे मिटटी को कठोर करता है उसी प्रकार उसका हृदय भी कठोर हो गया। अगर फ़िरौन सुनता, तो उसका हृदय नरम हो जाता, क्योंकि सूर्य मोम को नरम करता है।

यहूदा और पतरस

मसीह के चेले यहूदा और पतरस ने इसी सिद्धांत का प्रदर्शन किया। दोनों ने गंभीरता से पाप किया था। एक ने धोखा दिया और दूसरे ने यीशु को जानने से इंकार कर दिया। कौन बदतर है? कौन बता सकता है? उसी पवित्र आत्मा ने दोनों से अनुरोध किया। यहूदा ने खुद को कठोर किया, और उसका दिल पत्थर की तरह बन गया। दूसरी ओर, पतरस पवित्र आत्मा के प्रति ग्रहणशील था और उसका दिल पिघल गया। वह वास्तव में पश्चाताप कर रहा था और बाद में प्रारंभिक कलीसिया के महान प्रचारकों में से एक बन गया। जकर्याह 7:12, 13, को, परमेश्वर की गंभीर चेतावनी के लिए पढ़िए, जो उसकी आत्मा के अनुरोध को सुनने के खिलाफ और उसकी आत्मा की याचिका का पालन करने के खिलाफ हमारे हृदय को सख्त करने के बारे में है।

2. क्या आज्ञाकारिता को चुनने से पहले, परमेश्वर से "संकेत" मांगना सुरक्षित है?

उत्तर: नए नियम में, यीशु ने संकेत मांगने के खिलाफ कहा, "इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूँढ़ते हैं" (मत्ती 12:39)। वह पुराने नियम से, जो तब उपलब्ध शास्त्र था, इसका समर्थन कर रहा था और सच्चाई सिखा रहा था। वे ठीक समझ गए कि वह क्या कह रहा था। उन्होंने उसके चमत्कार भी देखे, लेकिन उन्होंने अभी भी उन्हें खारिज कर दिया। उसने उससे कहा, "जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे" (लूका 16:31)। बाइबल हमें पवित्रशास्त्र द्वारा सबकुछ का परीक्षण करने को कहती है (यशायाह 8:19,20)। यदि हम यीशु की इच्छा पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और जहाँ भी वह ले जाए वहाँ जाने को तैयार होते हैं तो वह वादा करता है कि वह हमें सत्य समझने में गलती नहीं करने देगा (यूहन्ना 7:17)।

3. क्या कभी ऐसा समय भी होता है, जब प्रार्थना सहायक नहीं होती है?

उत्तर: हाँ। यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघनता करता है (भजन संहिता 66:18) और फिर भी परमेश्वर से आशीष माँगता है, हालांकि वह बदलने की योजना नहीं बना रहा है, तो उस व्यक्ति की प्रार्थना न केवल बेकार है, बल्कि परमेश्वर कहता है कि यह घृणित है (नीतिवचन 28:9)।

4. मैं चिंतित हूँ कि मैंने पवित्र आत्मा को ठुकरा दिया होगा और मुझे क्षमा नहीं किया जा सकता है। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?

उत्तर: आपने पवित्र आत्मा को नहीं ठुकराया है। यह आप जान सकते हैं क्योंकि आप चिंतित या दोषी महसूस करते हैं। यह सिर्फ पवित्र आत्मा ही है जो आपको चिंता और दृढ़ता देता है (यूहन्ना 16:8-13)। यदि पवित्र आत्मा ने आपको छोड़ा होता, तो आपके दिल में कोई चिंता या दृढ़ विश्वास नहीं होता। खुशी मनाएँ और परमेश्वर की स्तुति करें! अब उसे अपना जीवन दें! और आगे के दिनों में प्रार्थनापूर्वक उसकी आज्ञाओं का पालन करें। वह आपको जीत देगा (1 कुरिन्थियों 15:57), आपको (फिलिप्पियों 2:13) बनाए रखेगा, और उसकी वापसी तक आपको संभाल कर रखेगा (फिलिप्पियों 1:6)।

5. बीज बोने वाले के दृष्टांत में (लूका 8:5-15), बीज का रास्ते के किनारे गिरने का क्या मतलब है, जो पक्षियों द्वारा चुग लिया गया था?

उत्तर: बाइबल कहती है, "बीज परमेश्वर का वचन है। मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने सुना; तब शैतान आकर उनके मन में से वचन उठा ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएँ" (लूका 8:11, 12)। यीशु यह संकेत दे रहा था कि जब हम समझते हैं कि पवित्र आत्मा हमें पवित्रशास्त्र से नई रोशनी के बारे में क्या करने के लिए कह रहा है, तो हमें उस पर कार्य करना होगा। अन्यथा, शैतान को हमारे दिमाग से उस सत्य को हटाने का अवसर प्राप्त हो जायेगा।

6. यहोवा, मत्ती 7:21-23 में, उन लोगों को कैसे कह सकता है कि मैं तुम्हें नहीं जानता? मैंने सोचा कि परमेश्वर सबको जानता हैं और उसे सब कुछ पता हैं।

उत्तर: परमेश्वर किसी को व्यक्तिगत मित्र के रूप में जानने के बारे में यहाँ जिक्र कर रहा है। हम उसे एक दोस्त के रूप में जानते हैं यदि हम रोज़ाना प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के माध्यम से उसके साथ संवाद करते हैं, उसका अनुसरण करते हैं, और स्वतंत्र रूप से उसके साथ सुख और दुखों को एक सांसारिक मित्र के समान साझा करते हैं। यीशु ने कहा, "जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो" (यूहन्ना 15:14)। मत्ती अध्याय 7 में संबोधित लोगों ने उसकी पवित्र आत्मा को ठुकरा दिया होता। उन्होंने "पाप में उद्धार" या "कामों से मुक्ति" को गले लगा लिया होगा - इनमें से किसी को भी यीशु की आवश्यकता नहीं है। वे एक स्व-निर्मित लोग हैं जो उद्धारकर्ता से परिचित होने के लिए समय नहीं देते हैं। इसलिए, यीशु ने समझाया कि वह वास्तव में उनसे परिचित नहीं हो पाएँगे, या उनके व्यक्तिगत मित्रों के रूप में उन्हें जान पाएँगे।

7. क्या आप इफिसियों 4:30 को समझा सकते हैं?

उत्तर: आयत यह कहती है, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।" पौलुस यहाँ यह कह रहा है कि पवित्र आत्मा व्यक्ति है, क्योंकि केवल व्यक्ति ही दुखी हो सकते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह इस बात की पुष्टि कर रहा है कि मसीह का पवित्र आत्मा उनके प्रेमपूर्ण आग्रहों को अस्वीकार करने से दुखी हो सकती है। जैसा कि पक्ष के दूसरे पक्ष द्वारा लुभाने से बार-बार इनकार करने से, हमेशा के लिए एक मित्रता समाप्त हो सकती है, इसलिए पवित्र आत्मा के साथ हमारा रिश्ता स्थायी रूप से उसकी प्रेमपूर्ण आग्रहों का जवाब देने से इनकार करने से समाप्त हो सकता है।

अपनी टिप्पणियाँ या प्रश्न यहाँ लिखें

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

यह अध्ययन संदर्शिका 27 की शृंखला में से केवल एक है!

प्रत्येक पाठ आश्चर्यजनक तथ्यों से भरा हुआ है जो आपको और आपके परिवार को परिवर्तित कर देगा और आपको स्थायी उम्मीद दिलाएगा। एक भी ना चूकें।

अध्ययन संदर्शिका 15: ख्रीस्त विरोधी कौन है?
अध्ययन संदर्शिका 16: अंतरिक्ष से स्वर्गदूत के संदेश
अध्ययन संदर्शिका 17: परमेश्वर ने योजनाएं बनाई
अध्ययन संदर्शिका 18: सही समय पर! भविष्यवाणी की नियुक्तियों का खुलासा!
अध्ययन संदर्शिका 19: अंतिम न्याय
अध्ययन संदर्शिका 20: पशु की छाप
अध्ययन संदर्शिका 21: बाइबल भविष्यवाणी में संयुक्त राज्य अमरीका
अध्ययन संदर्शिका 22: दूसरी स्त्री
अध्ययन संदर्शिका 23: मसीह की दुल्हन (चर्च)
अध्ययन संदर्शिका 24: क्या परमेश्वर ज्योतिषियों एवं आध्यात्मिक वादों को प्रेरित करता है?
अध्ययन संदर्शिका 25: हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं
अध्ययन संदर्शिका 26: एक प्रेम जो बदलाव लाता है
अध्ययन संदर्शिका 27: पीछे मुड़ना नहीं

सारांश पत्र 27

इस सारांश पत्र को हल करने से पहले कृप्या इस पाठ को पढ़ ले। अध्ययन संदर्शिका में सभी उत्तर पाए जा सकते हैं। सही उत्तर पर सही चिन्ह करें। कोष्ठकों में दी गई संख्या (?) सही उत्तरों की संख्या दर्शाती हैं। (√) फॉर्म भरने के लिए कृपया "**अडोबी रीडर**" का उपयोग करें।

1. कोई भी पाप ऐसा पाप बन सकता है जिसे परमेश्वर क्षमा नहीं कर सकता। (1)

☐ हाँ। ☐ नहीं।

2. पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप है (1)

☐ हत्या।
☐ परमेश्वर को शाप देना।
☐ पवित्र आत्मा को अस्वीकार करना।

3. पवित्र आत्मा को कभी-कभी पापियों से दूर हो जाना चाहिए क्योंकि (1)

☐ पवित्र आत्मा के पास अन्य कार्य हैं।
☐ पवित्र आत्मा की, पापियों के बुरे व्यवहार पर धार्मिक क्रोध है।
☐ परमेश्वर उसे कुछ और करने के लिए कहता है।
☐ पापी उसकी प्रार्थनाओं के लिए बहरा बन गया है।

4. आप बेहतर जानते हैं कि पवित्र आत्मा आपके द्वारा, पाप में जारी रहने के कारण "बुझ जाता है"। (1)

☐ हाँ। ☐ नहीं।

5. किसी भी पाप या निन्दा को क्षमा किया जाएगा, अगर मैं (1)

☐ इसके बारे में पर्याप्त प्रार्थना करूं।
☐ ईमानदारी से यीशु के पास पाप स्वीकार करूँ।
☐ कई दिनों के लिए उपवास रखूँ।
☐ ईमानदारी से साक्षी दूँ।

6. पवित्र आत्मा के बिना, किसी को भी पाप के लिए दुख नहीं होता है, और न ही कोई कभी भी परिवर्तित हुआ है। (1)

☐ सत्य। ☐ असत्य।

7. उद्धार का आश्वासन कभी-कभी नकली हो सकता है। कुछ लोग जो निश्चित हैं कि वे बचाये गए हैं, वास्तव में खो गए हैं। (1)

☐ हाँ। ☐ नहीं।

8. उन वाक्यों को चिन्हित करें जो यूहन्ना 16:8, 13. के अनुसार पवित्र आत्मा के काम हैं। (2)

☐ मुझे गाना सिखाओ।
☐ मुझे भविष्यद्वाणी का भेंट दें।
☐ मुझे खुश रखो।
☐ पाप के बारे में मुझ पर दोष लगाओ।
☐ मुझे सच्चाई की ओर ले जाओ।

9. जब पवित्र आत्मा मुझे एक नई सच्चाई के बारे में बताता है या मेरे जीवन में पाप बताता है, तो मुझे (1)

☐ इसके बारे में पादरी से पूछना चाहिए।
☐ एक मानसिक चिकित्सक को दिखाना चाहिए।
☐ परमेश्वर से एक चिन्ह माँगना चाहिए।
☐ बिना किसी हिचकिचाहट के पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करें।
☐ सिक्का उछालें।

10. दाऊद ने परमेश्वर से प्रार्थना क्यों की, इसलिए कि वह पवित्र आत्मा को न हटाए? (1)

☐ क्योंकि पवित्र आत्मा उसे अपनी वीणा बजाने में मदद करता था।
☐ क्योंकि वह डर गया था कि पवित्र आत्मा उसकी जान ले सकता है।
☐ क्योंकि वह जानता था कि यदि आत्मा उससे निकलकर चली गई तो वह खो जाएगा।

अगले पृष्ठ पर जारी

11. मत्ती 7:21-23 के अनुसार किसी व्यक्ति के द्वारा चमत्कार करके, शैतानों को बाहर निकालना, यीशु के नाम पर भविष्यवाणी करना, और उसे अपने प्रभु रूप में स्वीकार करने का दावा करना न्याय के दिन पर्याप्त नहीं होगा। यीशु ने और क्या कहा जो बिल्कुल जरूरी था? (1)

- ☐ बहुत सारी गवाही करना।
- ☐ अक्सर सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना।
- ☐ अक्सर उपवास रखना।
- ☐ नियमित रूप से कलीसिया में भाग लेना।
- ☐ स्वर्गीय पिता की इच्छा करना।

12. 2 थिस्सलुनीकियों 2:10-12 के अनुसार, उन लोगों के साथ क्या होगा जो सत्य प्राप्त करने से इनकार करते हैं? (1)

- ☐ वे वैसे भी बचाए जाएँगे।
- ☐ परमेश्वर उन्हें पुनर्विचार करने के लिए कहेगा।
- ☐ परमेश्वर उन्हें एक गहन भ्रम भेज देगा, और वे विश्वास करेंगे कि झूठ सच है।

13. जब यहोवा कहता है, "मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था", तो उसका अर्थ होगा (1)

- ☐ वह नहीं जानता कि वह व्यक्ति कौन है।
- ☐ चेहरा परिचित है, लेकिन वह नाम भूल गया है।
- ☐ व्यक्ति ने कभी भी व्यक्तिगत मित्र के रूप में, उससे परिचित होने के लिए समय नहीं दिया।

14. यीशु ने, नए नियम में, चिन्ह मांगने के खिलाफ सिखाया। (1)

- ☐ हाँ। ☐ नहीं।

15. क्या आप अभी यीशु की बात सुनेंगे और ध्यान देंगे, जबकि वह आपसे पवित्र आत्मा के माध्यम से बात करता है?

- ☐ हाँ। ☐ नहीं।

उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर देना सुनिश्चित करें!

AMAZING FACTS
India

नामांकित होने के लिए अपना नाम, ईमेल और फोन नंबर दर्ज करें। अपनी अगली मुफ्त अध्ययन मार्गदर्शिका प्राप्त करने के लिए "जमा करें" पर क्लिक करें।

आपका नाम :					
आपका ईमेल :					
फोन नंबर :					
आपका पता :					
शहर जिला :		*राज्य :*		*देश:*	India
पिन:		*आयु वर्ग :*		*लिंग :*	

जमा करें

अपनी संपर्क जानकारी अपडेट करें

© 2020 Amazing Facts India • All Rights Reserved • Printed in India • +91 9169164480